P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-II* October-2015

संस्कृत साहित्य में गीतिकाव्य

निशि कान्त पाठक
शोधार्थी,
संस्कृत विभाग,
राँची विश्वविद्यालय,
राँची, झारखण्ड

सारांश

रविन्द्रनाथ ठाकुर का यह कथन सचमुच बेजोड़ है कि ''यदि संसार का सर्वाधिक आनन्द प्राप्त करना है तो उसे कवि की आँखों से देखो, समझो तथा अपनाओ।'' कहना न होगा कि कवियों की आँखें असाधारण प्रतिभा का कायल है। कवि का स्वभाव होता है कि वह तीनों लोक के रसात्मक पक्ष का सही चित्र उपस्थित करता है, परिणाम यह होता है कि कवि की कृतित्व भैतिक संसार से ऊपर उठकर रस रूपी आनन्द या परमानन्द अथवा ब्रह्मानंद सहोदर का रूप उपस्थित करता है। परिणाम यह होता है कि कवि की लेखनी अलौकिक चमत्कार को प्रकट करते हुए एक अलग प्रकार की अनुभूति करता है, जिसका ठीक–ठीक अनुभव करना सबके वश की बात नहीं। अगर अनुभव करे भी तो स्वाद अलग–अलग हो होगा।

मुख्य शब्द : साहित्य, गीतिकाव्य, नृत्य, संगीत एवं वाद्यंत्र।

प्रस्तावना

'गै' धातु से 'क्त' प्रत्यय से 'गीत' शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है। इसी में 'सम्' उपसर्ग जोड़कर 'संगीत' शब्द बनता है। सरस ब्रह्म की रसवत्ता ही संगीत है– 'रसो वै सः'[1]। इस प्रकार संगीत के द्वारा मनुष्य अपने सुख–दुःख के भावों को प्रकट करता है, यह बात भी सही है कि उसके जीवन में कभी न कभी संगीत का स्थान अवश्य रहा है, क्योंकि आत्मिक आनन्द प्राप्त करने का सफल माध्यम संगीत ही है, अतः संगीत को कला न मानकर उसका जीवन से संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। इस प्रकार नृत्य, संगीत तथा वाद्यंत्रों के द्वारा मनुष्य अपना मनोरंजन करता है।[2]

उपनिषदों में मृत्यु के बाद स्वर्ग में जिन सुखों का वर्णन किया गया है, एक संगीतज्ञ इसी लोक में तथा इसी जीवन में साथ ही इसी शरीर के माध्यम से उस सुख की अनुभूति को प्राप्त कर लेते हैं।

इस प्रकार मानव जीवन के किसी एक पक्ष का उद्घाटन गीति का प्रतिपाद्य विषय होता है, यद्यपि इसका आकार–प्रकार महाकाव्य के अपेक्षा छोटा होता है, साथ ही इसमें एक ही विषय का वर्णन होता है। इस गीति की आत्मा भावातिरेक होती है। हृदय की रागात्मक अनुभूति ही रीति है जिसमें रसात्मकता अत्यन्त ही आवश्यक है। भावों की प्रधानता इसका मुख्य तथा महत्वपूर्ण गुण है। इस प्रस्तुत को मोहकता से व्यक्त करना कवि की अपनी चीज मानी जाती है। इस प्रकार हृदय की रागात्मकता को भवनात्मक तत्तव पिरो कर छन्दोबद्ध प्रस्तुत ही गीति काव्य में चार चाँद लगा देता है। गीति काव्य में रागात्मकता या ध्वन्यात्मकता का वही स्थान है जो धूएँ में अग्नि का। गेयता इसकी आवश्यक गुण मानी जाती है। डॉ0 ओझा के अनुसार गीति काव्य में –

जिस छन्द बद्ध रचना में भावातिरेक की धारा इस रूप में प्रवाहित हो कि उसमें स्वर लहरियाँ स्वभावतः तरंगित हो।

जिस काव्य में एक लय या एक ही भाव के साथ–साथ एक ही निवेदन, एक ही रस, एक ही परिपाटी हो वह गीति काव्य है।[3]

काव्य की अभिव्यंजना के लिए संगीत के साथ–साथ अभिव्यक्ति तथा समन्वय भी चाहता है, तब एक मधुर गीतिकाव्य का जन्म होता है –

Music when combined pleasurable idea is poetry, music without idea is simple music the idea without the music is prose from is very definations.[4]

इस प्रकार मानव जीवन के किसी एक पक्ष का उद्घाटन या अन्तरात्मा के किसी एक भाग का सटीक चित्रण ही गीति काव्य के प्रतिपादय विषय होते हैं। यही वजह भी है कि गीति काव्य महाकाव्यों के अपेक्षा अधिक लोकाप्रिय भी माने गए हैं।

संस्कृत वाङमय में गीतिकाव्य एक महान परम्परा है। प्रथम गीति काव्य ऋग्वेद में मिलते है।

वैदिक रीति काव्यों में वशिष्ठ और वामदेव के सूक्त, अक्ष सूक्त, उषा सूक्त आदि हैं। रामायण में पति वियुक्त सीता के प्रति भेजा गया राम का संदेशवाहक हनुमान तो महाभारत में युधिष्ठिर द्वारा भेजे कृष्ण तथा दमियन्ती के पास नल के द्वारा भेजा गया संदेशवाहक हंस[5]। इसी क्रम में कालिदास कृत पद्य में विवशता तथा व्याकुलता दर्शनीय है। विरह का मारा–मारा फिरता पक्ष प्रत्येक वस्तु में अपनी पत्नी को देखता है –

प्रासादे सा पथि पथि च सा
पृष्ठतः सा पुरः सा।
सा सा सा जगति सकले
कोऽयम द्वैतवादः।।[6]

वहीं दूसरी ओर निर्दयी देवता को चित्र के अन्दर भी उन दोनों को मिलन सहन नहीं होता। यहाँ कवि का भाव अत्यन्त ही विलक्षण है, जो संगीत की धारा को चिर स्मरणीय बना देता है –

त्वमालिख्य प्रणय कुपितां धातुरागैः शिलाया
मात्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम्।
अस्त्रैस्तावन्मुहुरूपचिते दृष्टिरा लुप्यते में
क्रूरस्तास्मिन्नपि न सहते संगमं नौ कृतान्तः।।[7]

आचार्य जयदेव का 'गीतगोविन्द' कृष्ण के भिन्न–भिन्न प्रेम क्रीड़ाओं का चूडान्त निदर्शन है। जिसमें सौन्दर्य तथा माधुर्य का पराकष्ठा है –

रति सुखसारे गतिमभिसारे मदन मनोहर वेशम
न कुरू नितम्बिनि गमन विलम्बन मनुसरतं हृदयेशम्।
धीरे समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली
गोपीन पयोधर परिसर मर्दन चंचल कर युग शाली।।[8]

सच तो यह है कि प्रेम से प्रभावित कामिजन के हृदय में जो वृत्तियाँ उत्पन्न होती है वही भाव संगीत के माध्यम से उभर कर बाहर आते हैं। वही आचार्य भतृहरि ने अपने काव्य नीति शतकम् में मनुष्य के उन उदात्त गुणों को अध्ययन करने के लिए कहा है जो उनके मंगल के साधक हैं कि वही सज्जन है जो दूसरों के परमाणु के समान छोटे गुणों को, पर्वत के समान बनाकर अपने हृदय में सन्तोष का अनुभव करते हैं –

परगुण परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्।
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ?

मन के भावों का उन्मीलन दर्शनीय है –

यां चिन्तयामि मनसा मयि सा विरक्ता
साऽप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्य सक्तः।
अस्मत्कृतेषु परितुष्यति काचिदन्या
धिक् तां च तंच मदनं च इमां च मां च।।[9]

इसमें गंभीर नैतिकता को प्रकट करने वाला सरस पदावली जन–जन का कंठहार है –

साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात्पशुपुच्छविषाण हीनः।
तृणं खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।।[10]

गीति काव्यों के अन्तर्गत स्तोत्र काव्यों की महान् परंपरा है। जहाँ धर्म के भक्त अपने हृदय की बातों को ईश्वर के सामने प्रकट करने के लिए अपने कोमल तथा भक्तिमय हृदय को अभिव्यक्त करते हैं। यह चाहे शिवस्तोत्र हो या वैष्णव स्त्रोत जो अपनी भक्ति साधना को अन्तः परणा तथा प्रतिभा से रसभावयुक्त बनाकर संगीत के माधुर्य से श्रोताओं के हृदय को बलात् अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। 'भजगोविन्दम्' 'शिव स्तोत्र' इस कथन को पूरी तरह प्रमाणित करता है –

भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते।
प्राप्ते सन्निहिते मरणं नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे।।
बालस्तावत् क्रीडासक्त स्तरूण स्तावत तरूणीरक्तः।
वृद्धस्तावत् चिन्ता मग्नः पारे ब्रह्ममणि कोऽपि न लग्न।।[11]

इस प्रकार गीति काव्यों की एक लंबी परंपरा है। जिनमें घटकर्पर का 'नोतिसार', मयूर का 'सूर्य शतक' अमरूक का ''अमरूकशतक'', विल्हण का चौर पंचाशिका, भल्लट का 'भल्लटशतक', धोयी का 'पवन दूत', गोवर्धनाचार्य का 'आर्यासप्तसती' जगन्नाथ का भमिनी विलास 'गंगा लहरी', 'करूणा लहरी' तथा कविरूप गोस्वामी का 'हंसदूत' उत्कृष्ट गीति काव्य है।

इस प्रकार गुणों की दृष्टि से गीति काव्य अत्यन्त ही अपूर्व तथा हृदय ग्राही है। यह वेद के जितना प्राचीन है। भावपूर्ण कलात्मकता इसकी विशेष पूँजी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरिवंश पुराण 59–20।
2. चितौश्चिन्तहरैर्दिव्यैर्मानुषैश्च समन्ततः।
नृत्य संगीत वादिगैभूर्तलक्षणेऽपित प्रभूयते।।
3. डॉ0 दशरथ ओझा, हिन्दी नाटक उद्भव और विकास, पृष्ठ–381–382।
4. 'संस्कृत के महाकवि और काव्य'– डॉ0 राम जी उपाध्याय एवं राम गोपाल मिश्र।
5. 'व्रजभारती'– मथुरा, 2014 वि0 वर्ष 15, अंक।
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पाण्डेय एवं व्यास कृत।
7. मेधदूतम् – 44।
8. 'गीत गोविन्द' – जयदेव।
9. 'नीतिशतकम्' – भर्तृहरि।
10. शिवमहिम्नस्तोत्र – शंकराचाय।